आंख और दिमाग को बांधे रखने में सिनेमा का अहम रोल है। इसमें कोई शक नहीं कि जो लोग सत्ता में हैं या किसी तरह की ताकत उनके पास है, वे सभी अपना चेहरा चमकाने के लिए इस जरिये का उपयोग करते रहे हैं। नेता, मीडिया, कारोबारी, यहां तक कि कुछ बददिमाग भी फिल्मों से अपनी छवि बनाते रहे हैं। ताजा नाम हैं सलमान खान।

'अच्छे बच्चे' क्यों बन रहे...!

बॉलीवुड में हरकतों से बदनाम सलमान खान का नाम खराब होने की शुरुआत विवेक ओबेरॉय-ऐश्वर्य रॉय के झगड़े से हुई। काले हिरण का शिकार मामले में राजस्थान के विश्नोई समाज को नाराज कर दिया। हमारे यहां इस हिरण को मारने की मनाही है। बदनामी का सिलसिला मुंबई में सड़क किनारे सो रहे लोगों पर गाड़ी चढ़ाने तक खत्म नहीं हुआ। इस मामले में वे जेल भी गए। हालांकि, भ्रष्ट व्यवस्था के कारण वे ज्यादा दिन अंदर नहीं रहे। सलमान के पास पैसा भी है और ताकत भी।

चेन्नै से गौतमन भास्करन

पचास पार कर चुके सलमान खुद को 'अच्छा बच्चा' साबित करने में लगे हैं। दो साल पहले आई फिल्म 'बजरंगी भाईजान' में कुरुक्षेत्र के पवन कुमार चतुर्वेदी का किरदार इसी कड़ी में था। फिल्म में पाकिस्तान से भटक कर हिंदुस्तान आ गई बच्ची को वे बिना पासपोर्ट-वीजा के पाकिस्तान छोड़ कर आते हैं। सलमान ने यह भी दिखाया कि वे भारत और पाकिस्तान की कड़ी बनना चाहते हैं। दोनों देशों में कई दशक से तनातनी चल रही है। फिल्म के कई सीन बताते हैं कि पाकिस्तान के लोग बहुत अच्छे हैं। फिल्म में जब पाकिस्तान का पुलिसवाला, पवन को घर जाने में मदद करता है, तब वह पाकिस्तानी, चाहने वालों के लिए हीरो बन जाता है। पवन इस फिल्म में सरहद के दोनों तरफ के लिए हीरो बन जाता है। पाकिस्तानियों के लिए इस लिहाज से कि वहां की छोटी बच्ची को जान पर खेल कर छोड़ने आया और भारत में इसलिए कि उसने इस खतरनाक मकसद के लिए अपनी जिंदगी दावं पर लगा दी। पाकिस्तान के अलावा भारत के चीन से भी रिश्ते ठीक नहीं हैं। पिछले दिनों आई फिल्म 'ट्यूब लाइट' में सलमान फिर संबंध सुधारने वाले दूत हैं। 1962 की लड़ाई में कुमाऊं गांव की कहानी बताई गई है। लक्ष्मण सिंह बिष्ट शरीर से तो बड़ा हो गया है, दिमाग बच्चों का ही है। वह इतना धीमा है कि स्कूल से लेकर गांव तक सब उसे चिढ़ाते हैं- ट्यूब लाइट। कबीर खान के निर्देशन वाली 'ट्यूब लाइट' में सलमान के भाई सोहेल खान भी हैं।

बजरंगी भाईजान और 'ट्यूब लाइट' से सलमान खुद को देश प्रेमी बता चुके हैं।

सोहेल, भरत के किरदार में हैं, जो लक्ष्मण से तो छोटा है, लेकिन दिमाग में उससे कहीं आगे। गलत पहचान के कारण उसे शहीद बता दिया जाता है। आखिर में इस गलती को सुधारा गया। यह फिल्म भी सलमान की देश भक्ति बताती है। सलमान खान इसमें दिखाने की कोशिश कर रहे हैं कि चीनी हमारे जैसे ही हैं। फिल्मों के जरिये खुद की छवि बनाने का सलमान का एजेंडा साफ है। हालांकि, ऐसी कहानियां फिल्मी परदे से निकल कर कभी हकीकत नहीं बन पातीं। न तो पाकिस्तान से रिश्ते सुधरे, न चीन से। इस लिहाज से सलमान की कोशिश ठंडी कही जा सकती है। इंतजार उस वक्त का है, जब लोगों को यह हकीकत समझ में आ जाए कि सलमान खान क्या बेचना चाहते हैं।